16
रामधारी सिंह दिनकर
(जन्म : 1908 ई. / मृत्यु : 1974 ई.)

जीवन परिचय –

राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्य धारा के प्रमुख कवियों में दिनकर का नाम अग्रगण्य है। मैथिलीशरण गुप्त के बाद दिनकर राष्ट्र कवि के रूप में जाने गए। रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार के मुँगेर जिले के सिमरिया गाँव के एक साधारण किसान परिवार में हुआ। उनकी बी.ए. तक की शिक्षा पटना विश्वविद्यालय में हुई।

विभिन्न विभागों में अपनी सेवाएँ देने के बाद गृह मंत्रालय में हिन्दी सलाहकार का पद सँभाला।

उनकी प्रमुख कृतियों में 'उर्वशी' को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार, 'संस्कृति के चार अध्याय' को साहित्य अकादमी और 'कुरुक्षेत्र' को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यों में 74 वाँ स्थान दिया गया । वे 1952 में भारतीय संसद के सदस्य रहे हैं। भारत सरकार द्वारा उनको पद्मभूषण से अलंकृत किया गया है।

कृतियाँ – रेणुका, हुँकार, रसवन्ती, कुरुक्षेत्र, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा।

पाठ परिचय –

'ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से' पाठ 'अर्द्धनारीश्वर' पुस्तक से संकलित किया गया है। प्रस्तुत निबंध में कवि रामधारी सिंह दिनकर ने मानव चरित्र की सबसे भयावह बुराई 'ईर्ष्या' के बारे में उल्लेख किया है। कवि ने ईर्ष्यालु मनुष्य के चरित्र की कमजोरियों को उदाहरण के साथ बखूबी स्पष्ट किया है कि किस प्रकार ईर्ष्यालु व्यक्ति अपने पास उपलब्ध साधनों से आनंद न उठाकर दूसरों के पास उपलब्ध साधनों से कुढ़कर अपने जीवन मूल्यों का ह्रास करता है। कवि दिनकर ने एक तरफ ईर्ष्यालु लोगों से बचने का उपाय बताया है तो दूसरी तरफ जो लोग ईर्ष्यालु स्वभाव के हैं वे किस प्रकार ईर्ष्या की लत से बच सकते हैं, के लिए रास्ता सुझाया है।

निश्चय ही यह निबंध स्वाभाविक मानवीय कमजोरियों को दृष्टिपात कराने में भाव एवं भाषा की दृष्टि से समर्थ है।

ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से

मेरे घर के दाहिने एक वकील रहते हैं, जो खाने पीने में अच्छे हैं। दोस्तों को भी खूब खिलाते हैं और सभा सोसाइटियों में भी भाग लेते हैं। बाल बच्चों से भरा पूरा परिवार, नौकर भी सुख देने वाले और पत्नी भी अत्यन्त मृदुभाषिणी। भला एक सुखी मनुष्य को और क्या चाहिए। मगर वे सुखी नहीं हैं। उनके भीतर कौन–सा दाह है, इसे मैं भली–भाँति जानता हूँ। दरअसल उनके बगल में जो बीमा एजेन्ट है उनके वैभव की वृद्धि से वकील साहब का कलेजा जलता रहता है। वकील साहब को भगवान ने जो कुछ दे रखा है, वह उनके लिए काफी नहीं दिखता। वह इस चिन्ता में भुने जा रहे हैं कि काश एजेन्ट की मोटर, उसकी मासिक आय और उसकी तड़क–भड़क मेरी भी हुई होती।

ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है जो दूसरों के पास हैं। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या ? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी ही पड़ती है।

एक उपवन को पाकर भगवान को धन्यवाद देते हुए उसका आनन्द नहीं लेना और बराबर इस चिन्ता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला। यह ऐसा दोष है जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भी भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन–रात सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है।

ईर्ष्या की बेटी का नाम निन्दा है, जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है वही बुरे किस्म का निन्दक भी होता है। दूसरों की निन्दा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जाएँगे और जो स्थान है उस पर मैं अनायास ही बैठा दिया जाऊँगा। मगर ऐसा न आज तक हुआ है और न होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निन्दा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण सद्गुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निन्दा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाए तथा गुणों का विकास करे।

ईर्ष्या का काम जलाना है मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है, जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत से लोगों को जानते होंगे जो ईर्ष्या और द्वेष की

साकार मूर्ति हैं और जो बराबर इस फिक्र में लगे रहते हैं कि कहाँ सुनने वाला मिले और अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक–एक काण्ड इस ढंग से सुनाते हैं मानो विश्व कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। अगर जरा अपने इतिहास को देखिए और समझने की कोशिश कीजिए कि जब से उन्होंने इस सुकर्म का आरम्भ किया है, तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। यह भी कि वे निन्दा करने में संयम और शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो आज उनका स्थान कहाँ होता।

चिन्ता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचंड चिंता ने पकड़ लिया है, उस बेचारे की जिन्दगी ही खराब हो जाती है, किन्तु ईर्ष्या शायद फिर चिन्ता से भी बदतर चीज है क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुंठित बना डालती है।

मृत्यु शायद फिर भी श्रेष्ठ है बनिस्पत इसके कि हमें अपने गुणों को कुंठित बनाकर जीना पड़े, चिंतादग्ध व्यक्ति समाज की दया का पात्र है, किन्तु ईर्ष्या से जला–भुना आदमी जहर की चलती–फिरती गठरी के समान है जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है।

ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष नहीं है। प्रत्युत इससे मनुष्य के आनन्द में भी बाधा पड़ती है। जब भी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का उदय होता है, सामने का सुख उसे मद्धिम–सा दिखने लगता है। पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता और फूल तो ऐसे हो जाते हैं मानो वे देखने के योग्य ही नहीं हो।

आप कहेंगे कि निन्दा के बाण अपने प्रतिद्वंद्वियों को बेधकर हँसने में एक आनंद है और यह आनंद ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है। मगर यह हँसी मनुष्य की नहीं, राक्षस की हँसी होती है। यह आनंद दैत्यों का आनंद होता है।

ईर्ष्या का एक पक्ष सचमुच ही लाभदायक हो सकता है जिसके अधीन हर आदमी, हर जाति, और हर दल अपने को अपने प्रतिद्वंद्वी का समकक्ष बनाना चाहता है, किन्तु यह तभी संभव है जबकि ईर्ष्या से जो प्रेरणा आती हो, वह रचनात्मक हो।

अक्सर तो ऐसा ही होता है कि ईर्ष्यालु व्यक्ति यह महसूस करता है कि कोई चीज है जो उसके भीतर नहीं है। कोई वस्तु है जो दूसरों के पास है, किन्तु वह यह नहीं समझ पाता कि इस वस्तु को प्राप्त कैसे करना चाहिए और गुस्से में आकर वह अपने किसी पड़ोसी मित्र या समकालीन व्यक्ति को अपने से श्रेष्ठ मानकर उससे जलने लगता है, जबकि ये लोग भी अपने आप से शायद वैसे ही असंतुष्ट हों।

आपने यही देखा होगा कि शरीफ लोग यह सोचते हुए अपना सिर खुजलाया करते हैं कि फलाँ आदमी मुझसे क्यों जलता है ? मैंने तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ा और अमुक व्यक्ति इस कदर निंदा में क्यों लगा हुआ है ? सच तो यह है कि मैंने सबसे अधिक भलाई उसकी ही की है।

यह सोचते हैं—मैं तो पाक साफ हूँ, मुझमें किसी व्यक्ति के लिए दुर्भावना नहीं, बल्कि अपने दुश्मनों की भी भलाई ही सोचा करता हूँ। फिर ये लोग मेरे पीछे क्यों पड़े हुए हैं? मुझमें कौन—सा वह एब है जिसे दूर करके मैं इन दोस्तों को चुप कर सकता हूँ ?

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जब इस तजुर्बे से होकर गुजरे, तब उन्होंने एक सूत्र कहा—"तुम्हारी निन्दा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है।"

और नीत्से जब इस कूचे से होकर निकला, तब उसने जोरों का एक ठहाका लगाया और कहा कि "यार, ये तो बाजार की मक्खियाँ हैं, जो अकारण हमारे चारों ओर भिनभिनाया करती हैं।"

ये सामने प्रशंसा और पीठ पीछे निन्दा किया करते हैं। हम इनके दिमाग में बैठे हुए हैं, ये मक्खियाँ हमें भूल नहीं सकतीं और चूँकि ये हमारे बारे में सोचा करती हैं, इसलिए ये हमसे डरती हैं और हम पर शंका भी करती हैं।

ये मक्खियाँ हमें सजा देती हैं हमारे गुणों के लिए। ये एब को तो माफ कर देंगी, क्योंकि बड़ों के एब को माफ करने में भी शान है, जिस शान का स्वाद लेने के लिए ये मक्खियाँ तरस रही हैं। जिनका चरित्र उन्नत है, जिनका हृदय निर्मल और विशाल है, वे कहते हैं—"इन बेचारों की बातों से क्या चिढ़ना ? ये तो खुद ही छोटे हैं।"

जिनका दिल छोटा है और दृष्टि संकीर्ण है, वे मानते हैं कि जितनी भी बड़ी हस्तियाँ हैं, उनकी निन्दा ठीक है। और जब हम प्रीति, उदारता एवं भलमनसाहत का बर्ताव करते हैं, तब भी वे यही समझते हैं कि हम उनसे घृणा कर रहे हैं और हम चाहे उनका जितना उपकार करें, बदले में हमें अपकार ही मिलेगा।

दरअसल हम जो उनकी निन्दा का जवाब न देकर चुप्पी साधे रहते हैं, उसे भी वे हमारा अहंकार समझते हैं। खुशी तो उन्हें तभी हो सकती है, जब हम उनके धरातल पर उतर कर उनके छोटेपन के भागीदार बन जाएँ।

सारे अनुभवों को निचोड़ कर नीत्से ने एक दूसरा सूत्र कहा,—"आदमी में जो गुण महान समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं।"

तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है? नीत्से कहता है कि "बाजार की मक्खियों को छोड़कर एकांत की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान है, उसकी रचना और निर्माण बाजार के सुयश से दूर रह कर किया जाता है। जो लोग नये मूल्यों का निर्माण करने वाले होते हैं, वे बाजारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते।" जहाँ बाजार की मक्खियाँ नहीं भनकती, वहाँ एकान्त है।

यह तो हुआ ईर्ष्यालु लोगों से बचने का उपाय, किन्तु ईर्ष्या से आदमी कैसे बच सकता है?

ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वाभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है। जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा आएगी, उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

कठिन शब्दार्थ

मृदुभाषिणी	–	मधुर बोलने वाली।
दंश	–	पीड़ा।
वेदना	–	दुःख।
सद्गुण	–	अच्छी आदत।
प्रचंड	–	तीव्र, तेज।
प्रतिद्वंद्वियों	–	विरोधियों।
निंदा	–	बुराई।
तजुर्बे	–	अनुभवों।
संकीर्ण	–	छोटी।
उपकार	–	भलाई।
अपकार	–	बुराई।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'उर्वशी' कृति को कौन–सा पुरस्कार मिला है ?
   (क) साहित्य अकादमी (ख) भारतीय ज्ञानपीठ
   (ग) व्यास सम्मान (घ) मूर्ति देवी सम्मान
2. "तुम्हारी निन्दा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है" यह किस महापुरुष का कथन है ?
   (क) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (ख) नीत्से
   (ग) दिनकर (घ) गाँधी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. कवि ने ईर्ष्या की बेटी का क्या नाम दिया है?
4. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने क्या सूत्र दिया है?
5. नीत्से ने ईर्ष्यालु लोगों के जलने का क्या कारण बताया है?
6. ईर्ष्या सबसे पहले किसको जलाती है?
7. पाठ के अनुसार किसी मनुष्य की उन्नति कब सम्भव है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

8. लेखक के पड़ोसी वकील के मन में कौन–सा दाह है?
9. ईर्ष्यालु लोगों से बचने के लिए नीत्से ने क्या उपाय सुझाया है?
10. लेखक ने ईर्ष्यालु व्यक्ति के क्या लक्षण बताए हैं?

निबंधात्मक प्रश्न –

11. 'ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से' रचना का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए?
12. 'चिन्ता को लोग चिता कहते हैं।' के समर्थन में अपनी बात रखते हुए स्पष्ट कीजिए।
13. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

    (क) ईर्ष्या की बेटी का नाम निन्दा है................................ मै अनायास ही बैठा दिया जाऊँगा।

    (ख) चिन्ता को लोग चिता कहते हैं... वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुंठित बना डालती है।